(मसीह में हमारी पहचान और विरासत को समझना)

1. ईश्वर ने परिवार को अपनी प्रकृति दिखाने के लिए बनाया

1 यूहन्ना 3:1
“देखो, पिता ने हम पर किस प्रकार का प्रेम किया कि हम ईश्वर
के पुत्र कहलाएं! इसलिए संसार हमें नहीं जानता, क्योंकि
उसने उसे नहीं जाना।”

ईश्वर ने मानव जीवन को इस तरह बनाया कि यह बचपन से शुरू होकर वयस्कता तक बढ़े, जिसमें पालन-पोषण की भूमिका भी शामिल होती है। यह प्राकृतिक अनुभव हमें समझने में मदद करता है कि आध्यात्मिक रूप से ईश्वर हमारे पिता हैं और हम उनके बच्चे हैं।

यह पारिवारिक भाषा रूपक मात्र नहीं है। मसीह में हमारी नई पहचान सचमुच ईश्वर के साथ एक पुत्र–पुत्री के रिश्ते को दर्शाती है। ईश्वर हमारे लिए केवल न्यायाधीश या सृष्टिकर्ता नहीं हैं—वे हमारे अब्दा पिता हैं (रोमियों 8:15)।

बाइबल में “पुत्रत्व” का अर्थ दो तरह से है—कानूनी (गोद लेना) और संबंधात्मक (घनिष्ठता)। जब हम पुनर्जन्म लेते हैं, हम केवल

क्षमा नहीं पाते, बल्कि ईश्वर के परिवार में पूर्ण अधिकार और पहुँच के साथ अपनाए जाते हैं (इफिसियों 1:5)।

2. पुत्रत्व स्वर्गदूतों से भी बड़ा विशेषाधिकार है

इब्रानियों 1:5
“किसी स्वर्गदूत से उसने कभी कहा—‘तू मेरा पुत्र है, आज मैंने तुझे जन्म दिया’? और पुनः कहा—‘मैं उसका पिता बनूंगा,
और वह मेरा पुत्र होगा’।”

इब्रानियों 1:14
“वे सब क्या सेवकात्मा नहीं हैं, जो उद्धार की वारिसों की
सेवा के लिए भेजे गए हैं?”

किसी स्वर्गदूत को कभी ईश्वर ने “पुत्र” नहीं कहा। स्वर्गदूत केवल सेवक हैं, जबकि विश्वासियों को पुत्र और पुत्री के रूप में अपनाया गया है। यह मसीह में हमारी पहचान की महिमा को आध्यात्मिक प्राणियों से ऊपर दर्शाता है।

मसीह—एकमात्र जन्मे पुत्र—के साथ हमारा संघ हमें ईश्वर के वारिस और मसीह के सह-वारिस बनाता है (रोमियों 8:17)। यही दिव्य अनुग्रह का रहस्य है।

3. ईश्वर के बच्चे अपने पिता पर भरोसा करते हैं

जैसे पृथ्वी के बच्चे अपने माता-पिता पर निर्भर रहते हैं, वैसे ही आध्यात्मिक बच्चे पूर्ण रूप से ईश्वर पर भरोसा करते हैं। सच्चा विश्वास संघर्ष करने में नहीं, बल्कि ईश्वर के प्रेम और व्यवस्था पर भरोसा करने में है।

मत्ती 6:25–26
“अपने जीवन की चिंता मत करो… आकाश के पक्षियों को देखो… तुम्हारा स्वर्गीय पिता उन्हें खिलाता है। क्या तुम उनसे
अधिक मूल्यवान नहीं हो?”

येशु ने सिखाया कि बालक जैसा भरोसा राज्य की पहचान है। ईश्वर के बच्चे विश्वास में चलते हैं, यह जानते हुए कि हमारा पिता हमारी जरूरतों को जानता और पूरी करता है।

ईश्वर पर निर्भर होना असंवेदनशीलता नहीं है। यह विश्वास है जो

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

विश्राम और आज्ञाकारिता के माध्यम से प्रकट होता है (इब्रानियों 4:9–11)। हम भरोसा करते हैं क्योंकि वह विश्वासयोग्य हैं।

4. पवित्र आत्मा हमारे पुत्रत्व की पुष्टि करता है

रोमियों 8:15–16
“तुमने गोद लेने की आत्मा प्राप्त की, जिससे हम ‘अब्बा, पिता’ पुकारते हैं। आत्मा स्वयं हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है कि हम ईश्वर के बच्चे हैं।”

पवित्र आत्मा हमारे गोद लेने की गवाही देता है। हम केवल विश्वास ही नहीं करते—हम अनुभव करते हैं, जानते हैं और महसूस करते हैं कि ईश्वर हमारे पिता हैं। यह घनिष्ठ पुकार—“अब्बा!”—पिता और बच्चे के घनिष्ठ संबंध को दर्शाती है।

गलातियों 4:6
“तुम पुत्र होने के कारण, ईश्वर ने अपने पुत्र की आत्मा
हमारे हृदयों में भेजी, और वह पुकारती है—‘अब्बा, पिता!’”

गोद लेने की आत्मा कानूनी घोषणा और आध्यात्मिक अनुभव दोनों है। हम अब दास नहीं हैं (पाप और भय के), बल्कि पुत्र हैं—अधिकार और पहुँच के साथ (गलातियों 4:7)।

5. सच्चे पुत्र आत्मा द्वारा नेतृत्व प्राप्त करते हैं

रोमियों 8:14
“जो भी ईश्वर की आत्मा से नेतृत्व पाता है, वही ईश्वर के
पुत्र हैं।”

सच्चे पुत्रत्व का प्रमाण केवल शब्द या ज्ञान नहीं है—यह आत्मा द्वारा निर्देशित जीवन है। ईश्वर के बच्चे पिता की आवाज़ सुनते हैं, जैसे येशु ने किया (यूहन्ना 5:19)।

पुत्रत्व जिम्मेदारी के साथ आता है—ईश्वर की इच्छा के अधीन होना। पुत्र होने का अर्थ है उनके मार्गदर्शन, अनुशासन (इब्रानियों 12:6) और प्रेम में जीवन जीना।

6. पुत्रत्व मसीह में विश्वास के द्वारा प्राप्त होता है

यूहन्ना 1:12
“जो उसे स्वीकार करते हैं, उन्हें अधिकार दिया कि वे ईश्वर
के बच्चे बनें, उन लोगों को जो उसके नाम में विश्वास करते हैं।”

हम स्वाभाविक रूप से ईश्वर के बच्चे नहीं हैं (यूहन्ना 1:13)। हम मसीह को स्वीकार करके—पश्चाताप और विश्वास के माध्यम से—ईश्वर के बच्चे बनते हैं। यह अलौकिक जन्म है।

1 पतरस 1:23
“तुम पुनर्जन्मित हुए, नाशवंत बीज से नहीं, बल्कि अमर शब्द से, जो जीवित है और अनंतकाल तक रहता है।”

पुत्रत्व नया जन्म (पुनर्जीवन) का परिणाम है। पुनर्जन्म के बिना हम बाहर वाले ही रहते हैं (यूहन्ना 3:3)।

7. ईश्वर के बच्चों को फिर से बालक जैसा बनना चाहिए

मत्ती 18:3

“मैं तुमसे कहता हूँ, यदि तुम बदलकर छोटे बच्चों जैसा नहीं बनते, तो तुम स्वर्गराज्य में प्रवेश नहीं कर सकते।”

येशु बालक समान निर्भरता, विश्वास और आज्ञाकारिता की हृदय स्थिति की बात कर रहे हैं, न कि अपरिपक्वता की।

राज्य में महानता बालक समानता से मापी जाती है, शक्ति या अहंकार से नहीं। ईश्वर गर्व करने वालों का विरोध करता है, पर विनम्रों को अनुग्रह देता है (याकूब 4:6)।

8. पुत्रत्व का उद्घाटन चर्च की नींव है

मत्ती 16:16–18
“तुम मसीह हो, जीवित ईश्वर का पुत्र।”
येशु ने उत्तर दिया—“इस चट्टान पर मैं अपनी चर्च बनाऊंगा।”

चर्च पीटर पर नहीं, बल्कि इस रहस्य पर आधारित है कि येशु ईश्वर के पुत्र हैं—और उसी में हम भी पुत्र बनाए गए हैं (इफिसियों 1:5; रोमियों 8:29)।

येशु की पुत्रत्व की पहचान हमारी पहचान को प्रकट करती है। पुत्र के माध्यम से हमें पिता तक पहुँच मिलती है, और चर्च पुत्रों का घर बन जाता है (इफिसियों 2:19)।

सच्चे ईश्वर के बच्चे के रूप में जियो

यदि आपने येशु मसीह को स्वीकार किया है:

आप अब आध्यात्मिक अनाथ नहीं हैं (यूहन्ना 14:18)
आप प्रेम किए गए, स्वीकार किए गए और अपनाए गए हैं (इफिसियों 1:5–6)
आपके पास पिता तक पहुँच है (इब्रानियों 4:16)
आप ईश्वर के वारिस और मसीह के सह-वारिस हैं (रोमियों 8:17)

इसलिए दास, बाहर वाले या चिंतित मजदूर की तरह जीना बंद करें। आप प्रिय बच्चे हैं। आपका पिता अच्छा, विश्वासयोग्य और हमेशा आपके साथ है। उसमें विश्राम करें, उसकी सुनें, और उसके साथ चलें।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp